7.	खरपतवार नियंत्रण	• पेंडिमैथेलिन नामक खरपतवारनाशी की 400 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ की दर से बीजाई के 0–3 दिनों के अन्दर प्रयोग करना चाहिए। • चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण के लिए: 2,4–D नामक दवा की 200ग्राम / एकड़ अथवा मेट्स्ल्फुरोन 1.6ग्राम /एकड़ या कारफेंट्राजोन 8 ग्राम/एकड़ नामक दवा को 120 लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव किया जा सकता है। • संकरी पत्ती या घासों के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफोप 24 ग्राम या फेनोक्षाप्रोप 40ग्राम/ एकड़ स्ल्फोस्ल्फुरोन की 10 ग्राम / एकड़ मात्रा का प्रयोग करना चाहिए। मिश्रित खरपतवारो के नियंत्रण के लिए 2,4–डी अथवा मेट्स्ल्फुरोन को स्ल्फोस्ल्फुरोन या आईसोप्रोटुरोन के साथ बुआई के 30–35 दिनो बाद मिट्टी में पर्याप्त नमी की अवस्था पर छिड़काव किया जाना चाहिए।
8.	वृद्धि नियंत्रक	• अगेती बुवाई व 150% एन पी के के प्रयोग करने पर वृद्धि नियंत्रकों (क्लोरमाक्वेट क्लोराइड (CCC) / @0.2%) + टेबुकोनाजोल 250 ईसी / 0.1% का दो बार छिड़काव (तने की पहली गांठ बनने पर और फ्लैग लीफ आने के समय) करने से इस किस्म को गिरने से बचाया जा सकता है। • वृद्धि नियंत्रकों की 200 लीटर पानी में 400 मिलीलीटर क्लोरमाक्वेट क्लोराइड + 200 मिलीलीटर टेबुकोनाजोल (वाणिज्यिक उत्पाद मात्रा टैंक मिक्स) प्रति एकड़ मात्रा का प्रयोग दो बार करें।
9.	रोग एवं कीट नियंत्रण	• माहू या चेपा नमक कीट के नियंत्रण के लिए इमिडाकलोपरिड 17.8 SL की 40 मिली / एकड़ मात्रा का छिड़काव कर सकते हैं। • दीमक के प्रभावी नियंत्रण के लिए खेत की तैयारी के दौरान रेत के साथ फिप्रोनिल 0.3 जी आर 10 किलो प्रति एकड़ की सिफारिश की जाती है।
10.	सिंचाई	इस क्षेत्र की गेहूँ की फसल को सामान्यत: 5 से 6 सिंचाई की आवश्कता होती है, जिसमें पहली सिंचाई बुवाई के 20–25 दिन बाद तथा उसके बाद उपलब्ध नमी के आधार पर 25–35 दिनो के अंतराल पर करनी चाहिए।
11.	कटाई	गेहूँ की बालियां के पकने की अवस्था में फसल की कटाई करें तथा भंडारण से पहले अनाज को अच्छी तरह से सुखाया जाना चाहिए।
12.	अनुमानित उपज	किस्म की उपज 81.2 कु. प्रति हेक्टेयर।
13.	उत्पादन क्षमता	97.4 कु. प्रति हेक्टेयर।

डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक
भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, 132001 भारत

किसान सहायता नम्बर (टोल फ्री)
1800 180 1891

डी बी डब्ल्यू 303 (करण वैष्णवी)

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र की सिंचित दशा में अगेती बुआई के लिए

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर), पश्चिमी उत्तरप्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू-कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराईक्षेत्र)

संकलन एवं सम्पादन

हनीफ खान, ओम प्रकाश, चन्द्रनाथ मिश्रा, गोपालरेड्डी, सतीश कुमार, अमित कुमार शर्मा, संजय कुमार सिंह, ममृथा एच एम, पूनम जसरोटिया, ज्ञानेन्द्र सिंह, मदन लाल, रवीश चतरथ एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
करनाल, 132001 भारत
ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research
Karnal-132001 INDIA

वेबसाईट : www.iiwbr.icar.gov.in | कृषक हैल्पलाईन नः (टोल फ्री) 1800 180 1891

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्ता

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय गेहूँ एवँ जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित गेहूँ की किस्म डी बी डब्ल्यू 303 को भारत के उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के सिंचित क्षेत्र में अगेती बुआई वाली खेती अधिसूचित किया गया है। इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर डिवीजन को छोड़कर) और पश्चिमी उत्तरप्रदेश (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू–कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिले), हिमाचल प्रदेश (ऊना जिला और पांवटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) के कुछ हिस्सों को शामिल किया गया है।

डी बी डब्ल्यू 303 की उत्पादन विशेषताएं

- अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के गेहूं परीक्षणों में इस किस्म की औसत उपज 81.2 कुंतल / है. पायी गयी है जो की एच डी 2967 एवं एच डी 3086 से क्रमशः 30.3% एवं 11.7% अधिक है।
- उत्पादन परीक्षणों के तहत इस किस्म द्वारा 97.4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की रिकॉर्ड पैदावार क्षमता दर्ज की गयी है।
- इस किस्म की पूरे जोन में पैदावार की अच्छी स्थिरता पायी गयी है और अधिक उर्वरकों और वृद्धि नियंत्रकों के प्रयोग के लिए अच्छे परिणाम दर्शाए हैं।

रोग प्रतिरोधिता

यह किस्म पीला, भूरा व काला रतुआ की सभी प्रमुख रोगजनक प्रकारो के लिए प्रतिरोधक पायी गयी है। इसके अलावा डी बी डब्ल्यू 303 मे करनाल बंट (4.2%) एवं गेहूं ब्लास्ट रोग के प्रति अत्यधिक रोगरोधिता पायी गई है ।

दानों की गुणवत्ता

- डी बी डब्ल्यू 303 के दानों में उच्च प्रोटीन मात्रा (12.1%), अच्छा चपाती स्कोर (7.9), अधिक गीला व सूखा ग्लूटन मात्रा (34.9% और 11.3%) और बिस्कुट फैलाव गुणांक 6.7 सेमी है।
- अच्छा ब्रेड गुणवत्ता स्कोर (6.4 / 10.0), उच्च अवसादन मूल्य (64.8) के कारण यह किस्म गेहूँ के कई उत्पादों के लिए एक बहुत उपयुक्त है।

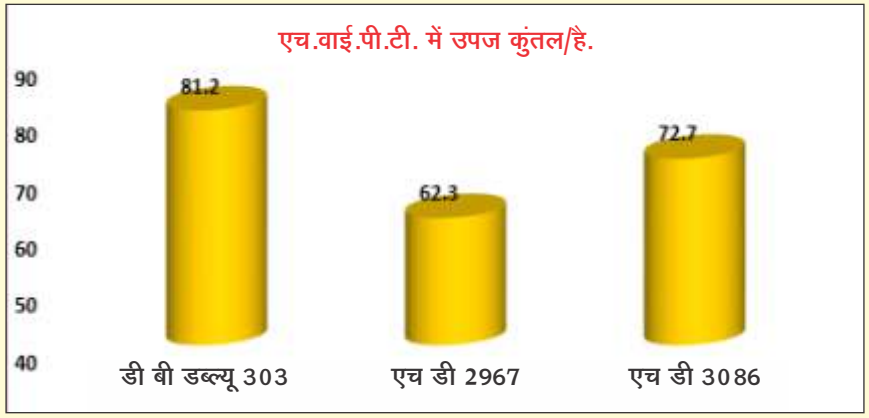

डी बी डब्ल्यू 303 (करण वैष्णवी) किस्म की विशेषताएं

विशेषता	अंतरण	औसत
बाली निकलने की अवधि (दिनों में)	92–114	101
पकने की अवधि (दिनों में)	143–160	156
पौधो की ऊंचाई (सेमी)	92–118	101
1000 दानों का वजन (ग्राम)	37–48	42

डी बी डब्ल्यू 303 (करण वैष्णवी) की उत्पादन पद्धति

1.	जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्ता	यह प्रजाति उत्तर पश्चिमी भारत के मैदानी क्षेत्र के सिंचित अवस्था में अगेती बुआई के लिए उपयुक्त है।
2.	भूमि का चुनाव एवं तैयारी	समतल उपजाऊ खेत में उपयुक्त नमी होने पर खेत की तैयारी करके बुवाई करें।
3.	बीज उपचार	गेहूँ के कंडुवा रोग से बचने के लिए वीटावैक्स (कार्बोक्सिन 37.5% थीरम 37.5%) / 2–3 ग्राम / किग्रा बीज से उपचरित करना चाहिए।
4.	बुआई का समय	25 अक्टूबर – 05 नवंबर
5.	बीज दर और अंतराल	100 किग्रा बीज / हैक्टर का इस्तेमाल करके पंक्तियों के बीच 20 सेमी की दूरी के साथ बुवाई की जानी चाहिए।
6.	उर्वरको की मात्रा एवं उपयोग का समय	उर्वरको का उपयोग मिट्टी परीक्षण पर आधारित होना चाहिए। उच्च उर्वरता वाली भूमि के लिए – एनः 150, पीः 60, केः 40 किलोग्राम / हेक्टेयर। जिसमें फास्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन मात्रा का) भाग बुवाई के समय तथा नत्रजन का 1/4 भाग पहली सिंचाई के बाद तथा शेष (मात्रा दूसरी सिंचाई के पूर्व करें। किस्म की पूर्ण उपज क्षमता को साकार करने के लिए, 150% एन पी के और वृद्धि नियंत्रकों के साथ 15 टन / है. देशी खाद के प्रयोग की सिफारिश की जाती है।